कभी फुर्सत हो तो जगदंबे

कभी फुर्सत हो तो जगदंबे
निर्धन के घर भी आ जाना
जो रूखा सूखा दिया हमें
कभी उसका भोग लगा जाना

न छत्र बना सका सोने का
न चुनरी घर मेरे तारों जड़ी
न पेड़े बरफ़ी मेवा है मां
बस श्रद्धा है नैन बिछाए खड़ी
इस श्रद्धा की रख लो लाज हे मां
मेरी अरजी को न ठुकरा जाना

जिस घर के दिये में तेल नहीं
वहां ज्योति जलाऊं मैं कैसे
मेरा खुद ही बिछोना धरती पर
तेरी चौकी सजाऊं मैं कैसे
जहां मै बैठा वहीं बैठ के मां
बच्चों का दिल बहला जाना

तू भाग्य बनाने वाली है
मां मै तकदीर का मारा हूं
हे दाती संभालो भिखारी को
आखिर तेरी आंख का तारा हूं
मैं दोशी तू निर्दोश है मां
मेरे दोशों को तू भुला जाना